राष्ट्रकवि बृजेश सिंह की ग़ज़लों में जल-पर्यावरण-चेतना

श्री रवींद्र पुंजाराम ठाकरे
हिंदी अनुसंधान केंद्र,
म. स. गा. महाविद्यालय,
मालेगांव कैम्प(नासिक)

भूमिका :-

प्रकृति और मानव का संबंध अन्योन्याश्रित है । प्रकृति के बगैर मानव के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती । प्रकृति या पर्यावरण का मानव जीवन पर गहरा प्रभाव है । पर्यावरण ने मानव को कई अनमोल उपहार इजाद किये हैं । जिन्हें प्राप्त करके मनुष्य ने अपनी उन्नति का रास्ता आसान बनाया है । विकास की लालसा में मनुष्य ने प्रकृति का बेखौफ दोहन किया । प्रकृति ने मनुष्य को शुध्द हवा दी, शीतल और स्वच्छ जल दिया, तेज चिलचिलाती धुप से बचने के लिए छायादार पेड़ दिये परंतु मनुष्य अपनी स्वार्थी प्रवृत्ति से बाज़ नहीं आया । यांत्रिक जीवन की चमक-दमक में आकर मनुष्य ने कल-कारखानों का निर्माण किया । मोटार-कारों पर सवार होकर मनुष्य मिलो की दूरी घण्टों में तय करने लगा । परिणामतः मोटारों और कारखानों से निकलनेवाले धुऐ ने शुध्द हवा को प्रदूषित कर दिया । अलग-अलग रसायनों से मिश्रित नालों का जल जब नदी, झरानों में सम्मिलित हुआ तब जल का प्रदुषण बढ़ गया । खेती, कारखानों, बड़ी-बड़ी कंपनियों को बसाने के लिए हरेभरे पेड़ों को काटकर विरान किया गया । जिसके परिणाम स्वरुप पर्यावरण में ग्लोबल वार्मिंग, भयंकर अकाल जैसी वैश्विक समस्याएं निर्माण हो गई है । जिसके कारण मनुष्य ही नहीं अपितु सारी जीव-सृष्टि का अस्तित्व खतरें में आ गया है ।

वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेक संस्थाएँ, सरकार तथा समाजसेवी जन काम कर रहे हैं । पर्यावरण का संरक्षण सबका उत्तरदायित्व हो गया है । पर्यावरण का संतुलन अगर बिगड़ा तो आनेवाले दिनों में धरती पर मानव समाज ही नहीं अपितु समस्त जीव सृष्टि के लिए खतरा निर्माण हो सकता है । अतः मानव समाज को खतरें से आगाह करने के लिए हिंदी साहित्य की ग़ज़ल विधा का विशेष योगदान रहा है । शेरों के माध्यम से ग़ज़लकार सोये हुए समाज में चेतना भरने का कार्य कर रहें हैं । ऐसे ग़ज़लकारों में सामाजिक, राजनीतिक, दार्शनिक, पारिवारिक, आर्थिक और पर्यावरण चेतना को बखुबी चित्रित किया गया है ।

हिंदी ग़ज़ल विधा का स्वरुप और विकास :-

'ग़ज़ल' विधा हिंदी की अत्यंत प्रभावी विधा है । गागर में सागर भरने की क्षमता ग़ज़ल में है । भावाभिव्यक्ति के लिए ग़ज़ल महत्वपूर्ण मानी जाती है । कवि कम शब्दों में अपने शेरों के माध्यम से समाज में चेतना निर्माण करता है । इसलिए वर्तमान समय में ग़ज़ल सबसे लोकप्रिय विधा बन गयी है ।

'ग़ज़ल' का इतिहास काफी पुराना है । 'ग़ज़ल' उर्दू की देन है परंतु हिंदी ग़ज़ल ने आज अपना अस्तित्व और लोकप्रियता स्वयं निर्माण की है ।हिंदी साहित्य में ग़ज़ल लिखने की परंपरा बहुत प्राचीन है । अमीर खुसरों ने हिंदी ग़ज़ल का सुत्रपात किया बाद में संत कबीर, भारतेंदु हरिश्चंद्र से होकर दुष्यंत कुमार तक ग़ज़ल का विकास होता रहा । दुष्यंत कुमार ने पहली बार ग़ज़ल को आम जन की पीड़ा के साथ जोड़ा और हिंदी ग़ज़ल की लोकप्रियता को व्यापक बनाया । वास्तव में दुष्यंत कुमार ने हिंदी ग़ज़ल को गरिमा दी और इसके बाद के समकालीन ग़ज़लकारों ने इसकी श्रीवृध्दि की हैं । इनमें गोपालदास सक्सेना 'नीरज', शमशेर बहादुर सिंह, देवेंद्र शर्मा इंद्र, बेकल उत्साही, मुनव्वर राणा, निदा फाज़ली, चंद्रसेन विराट, हरिश निगम, ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग', कमलेश भट्ट 'कमल', डॉ.कुंअर बेचैन, विज्ञान व्रत, राम मेश्राम, शेरजंग गर्ग, डॉ.गौरीशंकर 'पथिक' और राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह प्रमुख हैं ।

राष्ट्रकवि बृजेश सिंह की ग़ज़लों में जल-पर्यावरण-चेतना :-

राष्ट्रकवि बृजेश सिंह वर्तमान हिंदी ग़ज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर है । इन्होंने 10,000 शेरों की 'समाधान' शीर्षक से प्रलंब ग़ज़ल का निर्माण किया है । इस ऐतिहासिक रचना में संकलित एक हजार से भी अधिक शेरों में जल के महत्व, जल के संरक्षण एवं जल के दुरुपयोग को दर्शाया गया है । इन्हीं एक हजार शेरों को विभाजित करके चुनिंदा पाँच सौ सत्तर शेरों का एक संग्रह 'जल-पर्यावरण-समाधान' शीर्षक से शशिभूषण तिवारी जी ने 2014 में प्रभाजी विश्वभारती प्रकाशन, इलाहाबाद से संपादन किया । यह संग्रह जल पर्यावरण चेतना का मिल स्तंभ बन गया है ।

कवि बृजेश सिंह ने प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह में जल की निर्मिति से लेकर जल के उपयोग और मानव द्वारा जल की बर्बादी को मार्मिक शब्दों में बयान किया है । जल ही जीवन है, जल के बगैर जीव सृष्टि का बचना नामुमकिन है । जल-संकट वर्तमान समय की विश्वस्तरीय समस्या है । संभवत: अगला विश्वयुध्द पानी के लिए लड़ा जा सकता है । अगर आज मनुष्य ने जल का संरक्षण नहीं किया, उसे संभालकर उपयोग में नहीं लाया तो आनेवाली पीढ़ियों के लिए जल नहीं बचेगा । श्री. शशि-भूषण तिवारी जी ने अपनी भूमिका में निर्दिष्ट किया है, - "जल प्रकृति का अनूठा उपहार है । इसकी महत्ता को समझना बेहद जरुरी है । जल एक आम रासायनिक पदार्थ है, जो कि जीवन के सभी ज्ञान रुपों के अस्तित्व के लिए आवश्यक है । राष्ट्रकवि डॉ.बृजेश सिंह ने जल के महत्व को समझाने के लिए जल की वैज्ञानिक संरचना से लेकर जल की आध्यात्मिक महत्ता तक का आख्यान अपनी ग़ज़लों में प्रस्तुत किया है ।"[1]

ग़ज़लकार डॉ.बुजेश सिंह ने जल की महत्ता को स्पष्ट करते हुए जल को प्रकृति की अनमोल सौगात माना है । प्रकृति के इस अनमोल तोहफे को अगर हमने संरक्षित नहीं किया, जल की अगर बेहिसाब बर्बादी की तो आनेवाली नस्ले हमें अदूरदर्शिता के लिए कोसेंगी ।

"पृथ्वी ने दिया हमें सौगातों का खजाना है, आदमी की हरकतें फक्त एहसान झूठलाना है ।
पृथ्वीप्रदत्त उपहारों में आकंठ डूबे हैं हम,पर कुछ न कुछ तो धरती का कर्ज लौटाना है ।
धरती को जल कुछ वापस दे सकें अगर तो,ये कृतघ्नता का बोझ कुछ सर से हटाना है ।
पीढ़ियॉ अदूरदर्शिता के लिए कोसेंगी,सम्हल जाए अन्यथा भविष्य में पछताना है ।
धरा को जल्द वापस करें, अगर खुद को, आगामी पीढ़ियों की नजरों में न गिराना है ।"[2]

जल प्रकृति में नव संजीवनी भरनेवाला मुख्य तत्व है । अत: फ्रकृति का सबसे महत्वपूर्ण खज़ाना है । प्राचीन काल से ऋषि-मुनि, संतों, महात्माओं और वैज्ञानिकों ने समय-समय पर जल की महत्ता को रेखांकित किया है । जल सृष्टि के विकास का आधार है । आज वह समय आ गया है कि ऋषियों, संतों और वैज्ञानिकों के विचारों को आत्मसात करके ही हमें चलना होगा । आज सबको अपने अंतर्मन में संकल्प करना होगा और जल संरक्षण को जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाना होगा और तब ही मनुष्य जीवन में सुख, शांति और समृध्दि प्राप्त हो सकेगी । कवि बृजेश सिंह लिखतें हैं -

"जल व पर्यावरण को खत्म करने की साजिश, फक्त आदमी के वजूद को मानो मिटाना है ।
जल के सानिध्य में पलती रही हैं सभ्यताएँ, पानी को पीना पानी से ही नहाना है ।
जल से ही होता श्राध्द जल से ही आचमन,जल के बिना न धर्म कर्मकांड हो पाना है ।
वेद शास्त्र सब जोर देकर कहते 'बृजेश', जल से ही आई दुनिया, दल में ही समाना है ।"[3]

जल हमारी दैनंदिन जिंदगी का अविभाज्य हिस्सा है । खाने-पीने, पकाने-पचाने से लेकर सारे धार्मिक विधि, श्राध्द और कर्मकाण्ड जल के बीना असंभव है, अत: सभी दृष्टियों से मानव जीवन में जल का असाधारण महत्व है । डॉ. डी. एस्. ठाकूर जल की महत्ता को अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं - "भारतीय सभ्यता नदियों से सम्पृक्त है । इसलिए भारतीय संस्कृति के प्रत्येक सोपान नदियों से अथवा प्रकारान्तर से कहें तो जल से सम्बध्द हैं । सिन्धु घाटी, गंगा-घाटी, सोन-घाटी, नर्मदा-घाटी, बेलन-घाटी आदि सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे ही हुआ है । इससे मनुष्य का जल से सहजात सम्बन्ध प्रमाणित होता है । भारत में नदियों-की महत्ता सर्वोपरि है । गंगा को नदी नहीं अमृतजल-प्रवाहिनी सुरसरि कहा जाता है । यमुना कृष्णप्रिया हैं । नर्मदा को संस्कृतिस्त्रोतस्विनीकहकर पुराणकार ने अपनी श्रध्दा का निवेदन किया है ।"[4]

राष्ट्रकवि बृजेश सिंह भारतीय सभ्यता और संस्कृति के पुजारी हैं। जीवनदायिनी नदियों की गोद में पलती सभ्यताओं की याद दिलाते हुए वे मानव को सावधान करते हैं -

"हर प्राणी के लिए नदियाँ जीवनदायी होतीं,शास्त्रों का सरिता को प्रणम्य ठहराना है ।
आदमी सदियों से नदियों को पूजता आया,जीवदायिनी का पल-पल आभार माना है ।
नदी घाटियों में पलती आई सभ्यतायें,'बृजेश'मनुज से रिश्ता शाश्वत पुराना है ।"[5]

जहाँ जल है, वहाँ उसका मोल नहीं हो रहा । अनियंत्रित और निष्ठुरता से उसका उपयोग करके जल बर्बाद किया जा रहा है । परंतु मरुभूमि में अगर जाए तो वहाँ जल की एक-एक बूँद का महत्व समज में आता है । इस संदर्भ में डॉ.इंद्र बहादुर सिंह के विचार बड़े ही मौलिक है, वे लिखते हैं -"आज मानव-सभ्यता उस बिंदु से आगे निकल चुकी है, जहाँ से वापस लौटना बेहद कठिन है । परंतु फिर भी हताश होकर बैठना उचित नहीं है । मानव-जाति सामूहिक रुप से स्थिति की गंभीरता को समझते हुए धर्म-पथ पर चलते हुए वैज्ञानिक चेतावनियों के आधार पर अपनी दिशा का निर्धारण करे । इसी में सबकी भलाई है और मानव का अस्तित्व भी इसी पर निर्भर है ।"[6]

कवि बृजेश सिंह ने जहाँ एक ओर अपनी ग़ज़लों में जल का महत्व, जल प्रदूषण के संकट, जल प्रदूषण के कारणों को

उद्घाटित किया है वही दूसरी ओर जल प्रदूषण के उपाय एवं संरक्षण की महत्ता को भी चित्रित किया है । वे लिखते हैं -

"नदियों से रिश्ता हमारा सनातन पुराना है, प्रत्येक तीर्थ में पुण्य का काम नहाना है ।
सभी कर्मकाण्ड नदियों के तटों पर होते,नदियों को पावन पवित्र शास्त्रों ने माना है ।
महानदी कावेरी गोदावरी ब्रह्मपुत्र,गंगा नर्मदा को पतित पावनी ठहराना है ।
कल कारखानों नाली के गंदे पानी से,जीवदायी नदियों को नरककुण्ड बनाना है ।
जलस्त्रोत प्रदुषित करना महापाप 'बृजेश' , शपथ ले न खुद को पाप का भागी बनाना है ।"[7]

कवि जलकी बबार्दी के सक्त विरोधी है । पहाड़-पर्वत, खेत खलियानों में बारिश का जो पानी आता है, उसे अड़ाकर गड्ढों में एकत्रित करना चाहिए, जिससे भू-जल स्तर में वृध्दि हो सकती है । बारीश के दिनों में छत पर गिरनेवाले पानी को एक गड्ढे में समाविष्ट करें तो जल आपूर्ति की समस्याओं को हल किया जा सकता है । कवि की दृष्टि से सरोवर खोदना पुण्य का काम है । इन्हीं सरोवरों के सहारे खेती की सिंचाई होती है । जिससे स्वादिष्ट फल और स्वस्थ अन्न उपजा जाता है । गाय-भैसों एवं वन्य प्राणियों को पीने के पानी की समस्याओं से निजात मिलती है । सरोवरों के कारण भू-दल स्तरों में कमाल की बढ़ोतरी होती है । कई रोजगारों को जीवनदान मिलता है । किसान, खेतीदारमजदूर, अल्प भू-धारक एवं मेहनतकशों को किल्लत भरी जिंदगी से छुटकारा पाने के लिए जल को हरसंभव बचाना जरुरी है । शादी, ब्याह, पार्टियाँ, गृह-प्रवेश तथा तिज-त्यौहारों में भी जल को बचाना जरुरी है । जल संरक्षण की पुकार लगाते हुए ग़ज़लकार लिखते हैं -

"प्रदूषण के विरुध्द जमकर आवाज उठाना है,पत्रकारिता को महती दायित्व निभाना हैं ।
जल संरक्षण को खुलकर देना है समर्थन, सरकार संग जन-मन को भी आगे आना हैं ।
पर्यावरण संरक्षण के कई कार्य अव्यवस्थित,अव्यवस्था सुधारने का अभियान चलाना हैं ।
पर्यावरण संरक्षण के प्रति सबका ही दायित्व,पर्यावरणीय चेतना जन-मन में जगाना हैं ।
पर्यावरण संरक्षण प्राथमिकता देनी 'बृजेश',विकास के पीछे न इसे उपेक्षित बनाना हैं ।"[8]

कवि ने जीवन का रस तत्व जल को ही माना है । सृष्टि से पहले भी जल था और बाद में भी जल रहेगा किन्तु धरती के इस अनमोल रत्न को पानी की तरह बहाने पर कवि के हृदय में क्षोभ उत्पन्न होता है, जो सर्वथा उचित है ।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि, राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह की ग़ज़ले जल-पर्यावरण-चेतना का महत्वपूर्ण दस्तावेज है । डॉ. विनय कुमार पाठक लिखते हैं - "जल को लेकर आनेवाले कल में विश्वव्यापी संकट की चुनौती से हमें रु-ब-रु होना है । डॉ. बृजेश सिंह इसीलिए जल के संरक्षण व संवर्धन के लिए, चेतना जागृत करने के लिए कई ग़ज़लों की रचना कर बैठते हैं जो न केवल पढ़ने के लिए हैं, वरन् जीवन को गढ़ने और आगे लढ़ने के लिए भी सोपान है ।"[9]

ग़ज़लकार बृजेश सिंह ने अपनी ग़ज़लों में सीधी, सरल और प्रवाही खड़बोली हिंदी का प्रयोग करके जल चेतना के स्वर फूँके हैं । कहीं-कही प्रसंगानुरुप मुहावरें, कहावतें और सुक्तियों का प्रयोग भी मार्मिक बन गये हैं । कवि बृजेश सिंह की ग़ज़लों में जीव दया, मानवता, सहिष्णुता, अहिंसा और परोपकार का भाव विद्यमान है । जल-पर्यावरण-चेतना वैश्विक समस्या है । अत: कवि ने अपनी ग़ज़लो में विश्व मानव कल्याण की कामना की है । 'वसुदैव कुटुम्बकम्' की भावना इन ग़ज़लों सर्वत्र समायी हुई है ।

संदर्भ :-

1. डॉ. सिंह बृजेश, जल-पर्यावरण-समाधान (सं. तिवारी शशिभूषण), प्रभाश्री विश्वभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 06.
2. डॉ. सिंह बृजेश, जल-पर्यावरण-समाधान (सं. तिवारी शशिभूषण), प्रभाश्री विश्वभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 47.
3. डॉ. सिंह बृजेश, जल-पर्यावरणसमाधान (सं. तिवारी शशिभूषण), प्रभाश्री विश्वभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 49.
4. ठाकुर डी. एस्., राष्ट्रकवि डॉ बृजेश सिंह की ग़ज़लों का साहित्यिक अनुशीलन, प्रभाश्री विश्वभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं.2016, पृ.208-209.
5. ठाकुर डी. एस्., राष्ट्रकवि डॉ बृजेश सिंह की ग़ज़लों का साहित्यिक अनुशीलन, प्रभाश्री विश्वभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं.2016, पृ.208-209.
6. सं. सिंह आई. एन्. / डॉ. बृजेश, पर्यावरण-विमर्श, भावना प्रकाशन, दिल्ली, पृ.406.
7. सं. सिंह आई. एन्. / डॉ. बृजेश, पर्यावरण-विमर्श, भावना प्रकाशन, दिल्ली, पृ.74.
8. सं. सिंह आई. एन्. / डॉ. बृजेश, पर्यावरण-विमर्श, भावना प्रकाशन, दिल्ली, पृ.79.
9. डॉ.सिंह इंद्रनाथ, महाग़ज़ल समाधान में अभिव्यक्त चेतना, मित्तल एण्ड सन्स प्रकाशन, दिल्ली, भूमिका से.